

महाविद्या भुवनेश्वरी महातेजस्वी अद्वितीय एवं अनिवर्चनीय शक्ति है। इस जगत में अधिकांश बाधाएं अज्ञानता के कारण आती है और महाविद्या भुवनेश्वरी अपने साधक को ज्ञान से आप्लावित कर देती है जिससे उसका मन मस्तिष्क शांत हो जाता है और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं का त्वरित समाधान भी कर लेता है। भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने वाला साधक शांत, शीतल, धैर्यवान होता है और उसके जीवन में निम्न स्थितियां स्वतः अंकुरित होने लगती है -

1. साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। उसके इर्द-गिर्द एक तेजयुक्त आभा मण्डल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आसपास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना-नुच किए बिना पालन करते हैं।
2. इस साधना के सिद्ध होते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती हैं और मान-सम्मान में अभिवृद्धि होती है।
3. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है। उसका व्यापार तरक्की करता है और अगर वह नौकरीपेशा हो, तो उसकी पदोन्नति शीघ्र होती है।
4. इस साधना के प्रभाव से घर में अगर कोई तांत्रिक प्रयोग हो, तो वह नष्ट होता है।
5. कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं...अगर दुर्घटना एंव अकाल मृत्यु का योग हो, तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।
6. **साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है, हर क्षेत्र में सफल होता है, इंटरव्यू परीक्षा आदि में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।**
7. **ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय होता है। उसका प्रभाव और प्रतिष्ठा का समाज में व्यापक विस्तार होता है, उसके वचन प्रभावकारी होते है। वह सभी का प्रिय होता है और जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।**
8. इसके साथ ही साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यधिक सुखी होता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो, तो भी वह समाप्त हो जाता है।
9. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्यचकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएं स्वतः ही पूर्ण हो रही हैं।

10. **भगवती भुवनेश्वरी वास्तव में सम्पूर्ण 64 कलाओं से परिपूर्ण हैं, अतः इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति को जहां भोग, धन, वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, वहीं वह अन्त में मोक्ष की स्थिति प्राप्त कर ब्रह्म का पर्याय हो जाता है... और सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करता है।**

ऊपर बताई गई स्थितियां तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान हैं। वास्तव में तो साधक अपने-आप में ही अद्वितीय तेजस्वी बन जाता है। उसके अन्दर भगवती भुवनेश्वरी की शक्ति का वह तीव्र प्रवाह समाहित हो जाता है।

भुवनेश्वरी साधना शक्ति साधना ज्ञान स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना को करने से आद्या शक्ति के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है। यह 9 दिन की साधना है और इसे आप **भाद्रपद शुक्ल द्वादशी 23 सितम्बर 2026** से प्रारम्भ कर सकते है। इसके अतिरिक्त **नवरात्रि, सर्वार्थ सिद्धि योग अथवा शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार** से प्रारम्भ कर सकते हैं।

भुवनेश्वरी साधना में **1. भुवनेश्वरी यंत्र, 2. मूंगे का दाना और 3. भुवनेश्वरी माला** की आवश्यकता है।

रात्रि में नौ बजे के उपरान्त साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठें। गुरु चित्र का स्थापन करें तथा **'निखिल साधना विधान'** पुस्तक में दी गई विधि से गुरु पूजन करें।

अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर **भुवनेश्वरी यंत्र** स्थापित कर उसका **(कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प)** पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। फिर साधक दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न प्रकार से विनियोग करें -

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः, गायत्री छन्दः, भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थ पाठे विनियोगः ।।

जल भूमि पर छोड़ दें तथा शरीर के विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न न्यास सम्पन्न करें -

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।।
ईं शक्तये नमः नाभौ ।।
रं कीलकाय नमः पादयोः ।।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

न्यास के पश्चात् महाविद्या भुवनेश्वरी से अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना करें और **'मूंगे का दाना'** यंत्र पर अर्पित करें। इसके पश्चात् दोनों हाथों में पुष्प लेकर भुवनेश्वरी का ध्यान करें और पुष्प यंत्र पर अर्पित कर दें।

भुवनेश्वरी ध्यान

ॐ बालरविद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां
नयनत्रयुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे
भुवनेशीम्।।

महाविद्या भुवनेश्वरी को मेरा प्रणाम, जिनके श्रीअंगों की आभा सूर्य के समान है, मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीनों नेत्रों से युक्त हैं। उनके मुखपर मुस्कान की छटा छायी रहती है और हाथों में वरद, पाश एवं अभय मुद्रा शोभायमान है।

फिर **भुवनेश्वरी माला** पर सिन्दूर से तिलक करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र की 12 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।।ॐ ह्रीं ॐ ।।

फिर नित्य साधना करने से पूर्व यंत्र एवं माला का तिलक कर पूजन करें तथा 9 दिवसीय साधना काल में **भुवनेश्वरी माला** से 108 मालाएं करें। उसके उपरांत समस्त साधना सामग्री को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न साधना निश्चय ही सिद्ध होती है; इसमें कोई संशय नहीं।

निश्चित ही यह साधना एवं मंत्र परम गोपनीय और सामान्यतः अप्राप्य है, पर जिस किसी को भी यह साधना सिद्ध हो जाती है, उसके भाग्य से तो स्वयं देवी-देवता भी ईर्ष्या करने लगते हैं और वह दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-